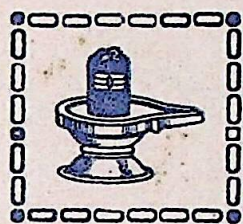


॥ श्रीः ॥

न्यायसूत्रकार अहल्यापति गौतम



अखिल भारतीय श्री गुर्जर गौड़ ब्राह्मण महासभाके २४ वें

“सुवर्ण जयन्ती महोत्सव”

श्री त्र्यम्बकेश्वर क्षेत्र, नासिक (महाराष्ट्र) के उपलक्ष्यमें

परमादरणीय श्री. चम्पालालजी चास्टवे (पुना) के
पिताश्री स्व. पंडित हजारीमलजी प्रभुरामजी चास्टवे,
माताश्री स्व. सौ. लक्ष्मीबाई हजारीमलजी चास्टवे एवं
धर्मपत्नी स्व. सौ. कुसुमदेवी चम्पालालजी चास्टवे की
पावन स्मृतिमें

सादर समर्पित

मूल्य २/- रुपये

डॉ. नारायणदत्त शर्मा

एम.ए., पीएच.डी.

१, छिम्पी वाडा पूर्वी,

मुजफ्फरनगर-२५१ ००२. (उ. प्र.)

पवित्र सेवामें



स्व. पं. हजारीमलजी प्रभुरामजी चास्टवे
पूना (महाराष्ट्र)

जन्म : इ. स. १८९८ ✱ स्मृतिदिन : दि. २६-९-१९५०

प्रस्तावना

कुछ समय पहले एक विलक्षण रीतिसे परमादरणीय पण्डितप्रवर श्री चम्पालालजीके दर्शनका सौभाग्य प्राप्त हुआ था, जो बादमें उत्तरोत्तर आत्मीयतापूर्ण आध्यात्मिक स्नेहसंबन्धके रूपमें शीघ्र ही परिवर्तित हो गया। वस्तुतः तो श्री चास्टवेजी एक मनस्वी एवं निरभिमानी महापुरुष हैं, इसीलिए ऐसा संभव हो सका।

अनन्तपुण्यप्रद, सर्वपापतापनाशक, परममहिमामंडित दिव्यतीर्थ त्र्यम्बके-स्वरमें होनेवाले अखिल भारतीय श्री गुर्जर गौड़ ब्राह्मण महासभाके सुवर्ण जयन्ती महोत्सवके निमित्त मुझे श्री चास्टवेजीने रामायण, पुराण, महाभारतादि आर्षग्रन्थोंके आधार पर ऐसा लेख लिखनेकी सत्प्रेरणा दी थी, जिससे महर्षि गौतमकी अत्यन्त प्राचीनता, अनेक तीर्थोंके साथ अत्यन्त घनिष्ठता तथा न्यायसूत्रकार होनेकी सत्यता व प्रामाणिकता ज्ञात हो सके।

थोड़ेसे समयमें अगाध भण्डारवाले परम विस्तृत आर्ष ग्रन्थोंसे जितनी भी सामग्री मुझे प्राप्त हो पाई, उसीके आधार पर यह एक अत्यन्त संक्षिप्त लेख तैयार हो सका है।

मैं जानता हूँ कि बहुतसे विषय इस लेखमें समाविष्ट नहीं हो सके हैं, हृदयमें अनेक जिज्ञासाएँ भी हैं, अतः इस लेखको पढ़नेवाले सभी प्रबुद्ध पाठकोंसे करबद्ध प्रार्थना है कि प्रतिक्रियाके रूपमें अपने विचार प्रेषित करके तथा अपना बहुमूल्य निर्देशन देकर अनुगृहीत करें।

इस लेखको लिखवानेमें परमश्रद्धेय मनीषी विद्वान् पंडित श्रीचम्पालालजी चास्टवे ही मेरे प्रेरणास्रोत हैं, इन महाभाग्यशाली महापुरुषके पिताश्री स्व. पंडित श्री हजारीमलजी प्रभुरामजी चास्टवे एवं परमादरणीया माता स्व. सौ. लक्ष्मीबाई हजारीमलजी चास्टवे एवं धर्मपत्नी अखण्ड सौभाग्यवती स्व. कुसुमदेवीजीके चरणोंमें पावनस्मृतिके साथ यह लेख भावकुसुमांजलिके रूपमें सादर समर्पित है।

नारायणदत्त शर्मा

न्यायसूत्रकार अहल्यापति गौतम

तत्कतोधिक्कतोतातथातैतथे
 तोंगदन्नांगधित्तशब्दान्मुहुः ।
 उच्चरन् हासविन्यासचञ्चन्मुखः
 संननर्तं स्वयं श्रीभवानीपतिः ॥

उज्ज्वलतम एवं गौरवपूर्ण कल्याणकारी अनेक महान् कार्योका अनुष्ठान करनेवाले प्राचीनतम ऋषि गौतमके जीवनचरित्रका वर्णन करना ही प्रस्तुत लेख का मुख्य मन्तव्य है ।

वेदोंसे लेकर संस्कृत महाकाव्यों तक सभी ग्रन्थोंमें ऋषि गौतमका तथा उस पवित्र वंशमें उत्पन्न मंत्रद्रष्टा ऋषियों का उल्लेख प्रचुर मात्रामें प्राप्त होता है । सर्वप्राचीन आर्ष ग्रन्थ ऋग्वेदमें ही २१४ मंत्र, यजुर्वेदमें ८१ मंत्र, अथर्ववेदमें २९ मंत्र तथा सामवेदमें भी अनेक साम गौतम वंशमें उत्पन्न तपःसिद्ध ऋषियों द्वारा दृष्ट हैं । इससे स्पष्ट है कि महर्षि गौतम एवं उनका वंश अत्यन्त प्राचीन है ।

जिन गौतम ऋषिके नामपर गोत्रका प्रवर्तन हुआ, उनके विषयमें मत्स्य पुराणके अध्याय १९६ में कहा गया है कि इनकी माताका नाम सुरूपा था तथा पिताका नाम अंगिरस था । इनके नानाका नाम मरीचि था, जो ब्रह्माके मानसपुत्रोंमें से एक हैं । अतः ब्रह्मा जितने प्राचीन हैं, उतने ही प्राचीन ऋषिश्रेष्ठ गौतम भी माने जा सकते हैं—

“ मरीचितनया राजन् सुरूपा नाम विश्रुता ।
 भार्या साऽगिरसो देवास्तस्याः पुत्रा दश स्मृताः ॥
 सुरूपा जनयामास ऋषीन् सर्वेश्वरानिमान् ।
 बृहस्पतिं गौतमं च संवर्तं च महाऋषिम् ॥
 आयास्यं वामदेवं च उचथ्यमुशिजं तथा ।
 इत्येते ऋषयः सर्वे गोत्रकाराः प्रकीर्तिता ॥ ”

अपने प्रिय सखा अर्जुनसे भगवान् कृष्णने एक बार कहा था कि ब्रह्माके रूपमें जिस समय मैंने ब्राह्मणोंकी सृष्टि की, उस समय उन ब्राह्मणोंने देवताओं, असुरों और महर्षियोंको उनका अपना अधिकार सौंप दिया, किन्तु अधिकार प्राप्त कर लेनेपर यदि उन देवताओं, असुरों और महर्षियोंने कोई अक्षम्य अपराध किया तो उन ब्राह्मणोंने उन्हें दण्डित भी किया । इस अवसर पर कृष्णने सर्वप्रथम महर्षि गौतम का नाम लिया, जिन्होंने देवराज इन्द्रको उसके अपराधका दण्ड शापके रूपमें प्रदान किया —

“ अहल्याधर्षणनिमित्तं हि गौतमाद्वरिश्मश्रुतामिन्द्रः प्रातः ”

(महा. शान्ति ३४२.२३) ।

इससे यह सिद्ध हो जाता है कि सृष्टिके आदिमें जब ब्रह्माजीके द्वारा ब्राह्मण उत्पन्न किए गए उसी समय गौतम भी उत्पन्न हुए ।

भगवान् सूर्यसे शुक्लयजुर्वेद प्राप्त करनेवाले मुनि याज्ञवल्क्यके साथ एक बार विश्वावसु गन्धर्व का जीवात्मा और परमात्माकी अभिन्नताके संबन्धमें संवाद हुआ था । ये विश्वावसु गन्धर्व महर्षि कश्यपकी संतान हैं, जिन्होंने याज्ञवल्क्य से भी पहले यह संवाद जैगिषव्य, असित, देवल, पराशर, भृगु, कपिल, शुक, नारद, पुलस्त्य, सनत्कुमार आदिसे सुन लिया था, किन्तु यह विषय महर्षि गौतमसे भी वे सुन चुके थे —

“ गौतमस्याष्टिषेणस्य पुलस्त्यस्य च धीमतः ।

सनत्कुमारस्य ततः शुक्रस्य च महात्मनः ॥

कश्यपस्य पितुश्चैव पूर्वमेव मया श्रुतम् ”

(महा. शान्ति. ३१८.५९-६२)

इससे यह सिद्ध हो जाता है कि महर्षि गौतम निश्चित रूपसे याज्ञवल्क्य ऋषिसे भी पूर्व हो चुके हैं । महर्षि कश्यप-भृगु आदि ऋषि जितने प्राचीन हैं, उन्हींके समकालीन गौतम भी हैं ।

और भी अनेक ऐसे पुष्ट संकेत मिलते हैं, जिनके आधार पर महर्षि गौतम अत्यन्त प्राचीन सिद्ध होते हैं ।

इन्द्र द्वारा अहल्याके धर्षणकी घटना तो भगवान् रामके समयसे हजारों वर्ष पहले ही घट चुकी थी । अध्यात्मरामायण इसमें प्रमाण है —

“ एवं वर्षसहस्रेषु ह्यनेकेषु गतेषु च ।

रामो दाशरथिः श्रीमानागमिष्यति सानुजः ॥ ”

(बालकाण्ड ५.३०.)

पुराणोंमें उल्लिखित राजाओंके इतिहासके अनुसार भगवान् गौतमकी पत्नी अहल्याकी स्थिति भी कमसे कम त्रेतायुगमें तो माननी ही पड़ती है, क्योंकि त्रेतायुगमें जिस समय भूम्यश्व राजा उत्तरपांचालका शासन कर रहा था उस समय उसके पुत्र मुद्गलके साथ इन्द्रसेनाका विवाह हुआ था, फिर मुद्गलसे वध्यश्व उत्पन्न हुआ । इसी वध्यश्वसे दिवोदास और अहल्याकी उत्पत्ति हुई । यही अप्सरा कन्या गौतमसे व्याही गई थी ।

गोदावरीमें अहल्यासंगम अथवा इन्द्रतीर्थ की उत्पत्तिके प्रसंगमें ब्रह्मपुराणके ८७ वें अध्यायमें कहा गया है कि ब्रह्माने अपनी सबसे श्रेष्ठ मानस कन्या अहल्याको उसके पालन-पोषणके निमित्त महर्षि गौतमको सौंप दिया, क्योंकि अन्य ऋषियोंकी अपेक्षा महर्षि गौतम ही उस समय समस्त गुणोंमें श्रेष्ठ, तपस्वी, बुद्धिमान्, समस्त शुभ लक्षणोंसे सुशोभित तथा वेद-वेदांगोंके ज्ञाता थे । बचपन बीत जानेके बाद युवती होनेपर अहल्याको वस्त्राभूषणोंसे सुसज्जित करके गौतम ऋषि ब्रह्माके पास उसे ले आए । उस समय तक महर्षि गौतमके मनमें अहल्याके प्रति जरा भी विकार उत्पन्न नहीं हुआ था । इससे प्रसन्न होकर भगवान् ब्रह्माने इन्द्रादि देवताओंको ठुकराकर उस दिव्यगुणसम्पदासे युक्त अहल्याका विवाह गौतममुनिसे ही कर दिया तथा ब्रह्मागिरि पर्वत उन्हें रहनेके लिए दिया । यह ब्रह्मागिरि पर्वत परम पवित्र, समस्त अभिलषित वस्तुओंको देनेवाला तथा मंगलमय था ।

किसी समय इन्द्र-अपराधकी घटनाके बाद पूर्णतः निर्दोष अहल्याको भी क्रोधवश सूखी नदी हो जानेका शाप दे दिया, किन्तु कृपाशील मुनि गौतमने तत्काल ही प्रसन्न होकर अपनी पत्नी अहल्यासे कहा कि हे कल्याणि ! पवित्र नदी गोदावरीमें मिल जानेपर तुम अपने स्वरूपको पुनः प्राप्त कर लोगी । ब्रह्मपुराणके अनुसार अहल्यासंगमतीर्थमें दो बातें विचित्र हुई—एक तो अहल्याका पुनः अपने स्वरूपमें लौट आना तथा इन्द्रका सहस्रभगसे सहस्राक्ष होना —

उभयं विस्मयकरं दृष्टवानस्मि नारद ।

अहल्यायाः पुनर्भावं शचीभर्ता सहस्रदृक् ॥

ततः प्रभृति तत्तीर्थमहल्यासंगमं शुभम् ।

इन्द्रतीर्थमिति ख्यातं सर्वकामप्रदं नृणाम् ॥

(ब्रह्म पु. ८७.६९-७०)

यद्यपि दोनोंको शाप मिला, तथापि दोनोंको दिया गया शाप वरदान-रूपमें सिद्ध हुआ । श्रीरामचरितमानसमें गोस्वामी तुलसीदासने भी श्रीराम विवाहके प्रसंगमें यह अच्छी तरहसे स्पष्ट किया है । उपर्युक्त कथासे भी मुनिशार्दूल गौतम एवं अहल्याकी अत्यन्त प्राचीनता सिद्ध होती है ।

मुनिसत्तम गौतमकी प्राचीनतम स्थितिका रहस्योद्घाटन करनेवाले एक दो स्थल महाभारतमें भी प्राप्त होते हैं—वनवासके समय युधिष्ठिर और कृष्णकी उपस्थितिमें महर्षि मार्कण्डेय एवं मुनि नारदका अचानक शुभागमन हुआ, इस अवसरपर मार्कण्डेयजीने सत्यवान्—सावित्रीका पावन उपाख्यान सुनाया, जिसमें उन्होंने कहा कि जब सावित्री और सत्यवान् घर नहीं पहुँचे तो उनके माता-पिता अत्यन्त व्याकुल हुए । समीप ही रहनेवाले ऋषियोंने समझाया—बुझाया कि निश्चित रूपसे सत्यवान् जीवित हैं और वे आयेंगे, आप चिन्ता न करें । यहाँ गौतम ऋषिका नाम आता है कि जिन्होंने असन्दिग्ध वाणीमें कहा कि मैं तपस्याके बलपर दूसरोंकी सारी चेष्टाएँ जान लेता हूँ । आप लोग मेरी यह बात बिल्कुल सच मानिए कि सत्यवान् जीवित हैं और मरे नहीं हैं —

“वायुभक्षोपवासश्च कृतो मे विधिवत् पुरा ।

अनेन तपसा वेद्मि सर्वं परिचिकीर्षितम् ॥

सत्यमेतन्निबोधध्वं ध्रियते सत्यवानिति ।”

(वनपर्व २९८.१२-१३)

मार्कण्डेय ऋषिकी अतिप्राचीनता सुप्रसिद्ध एवं प्रामाणिक है । चिरंजीवी महापुरुषोंमें इनकी गणना की जाती है तथा ये लोकचरित्रके अद्भुत ज्ञाता भी रहे हैं, अतः मुनिपुंगव गौतमकी प्राचीनता इस प्रसंगसे भी सुस्पष्ट व सुपुष्ट होती है ।

एक बार राजा पृथुके यज्ञमें महर्षि अत्रि और महर्षि गौतम उपस्थित हुए थे । वहाँ अत्रिने राजा पृथुकी स्तुति करते-करते उसे विधाता कह दिया, इसपर महर्षि गौतमने विरोध किया तथा अत्रि मुनिको समझाया कि इन्द्र ही हमारे प्रजापति हैं, जो इस यज्ञमें उपस्थित हैं और सामने ही बैठे हुए हैं—

सैवमत्रे पुनर्ब्रूया न ते प्रजा समाहिता ।

अत्र नः प्रथमं स्थाता महेन्द्रो वै प्रजापतिः ॥

(वनपर्व १८५.१५)

अत्रि मुनि ब्रह्माके मानसपुत्र माने जाते हैं, इनके साथ गौतम मुनिका उल्लेख होनेसे यह स्पष्ट हो जाता है कि गौतम ऋषि भी अत्रिमुनि तथा राजा पृथुके समान ही अत्यन्त प्राचीन हैं ।

कृष्णने जिस शिवसहस्रनामका उपदेश भीष्मके सम्मुख युधिष्ठिरको सुनाया, वह ब्रह्मासे लेकर उपमन्यु पर्यन्त क्रमशः किसे किसे प्राप्त हुआ, यह पूरी परम्परा महाभारतमें स्पष्ट की गई है । इसी परम्परामें गौतम मुनिका उल्लेख किया गया है, जिन्होंने शुक्रसे शिवसहस्रनाम प्राप्त करके उसका उपदेश वैवस्वत मनुको दिया —

“ब्रह्मा प्रोवाच शक्राय शक्र प्रोवाच मृत्यवे ।
मृत्यु प्रोवाच रुद्रेभ्यो रुद्रेभ्यस्तण्डिमागमत् ॥
महता तपसा प्राप्तस्तण्डिना ब्रह्मसन्निधिं ।
तण्डिः प्रोवाच शुक्राय गौतमाय च भार्गवः ॥
वैवस्वताय मनवे गौतमः प्राह माधवः ।
नारायणाय साध्याय समाधिष्ठाय धीमते ॥
यमाय प्राह भगवान् साध्यो नारायणोऽच्युतः ।
नाचिकेताय भगवानाह वैवस्वतो यमः ॥
मार्कण्डेयाय वाष्ण्ये नाचिकेतोऽभ्यभाषत ।
मार्कण्डेयान्मया प्राप्तो नियमेन जनार्दनः ॥ ”

(अनुशासनपर्व १७.१७५-१८०)

उपर्युक्त साक्ष्यके आधार पर यह कहनेमें कोई आपत्ति नहीं है कि महर्षि गौतम वैवस्वतमनुके समान ही अत्यन्त प्राचीन हैं ।

एक बार ऋषि गौतमने अंगिरा महर्षिसे तीर्थके विषयमें उत्पन्न अपना धर्मसंशय स्पष्ट किया था, उसके प्रत्युत्तरके रूपमें अंगिराने जो समाधान किया, वैसा ही समाधान उन्होंने कश्यप मुनिसे प्राप्त किया था, जिसे भीष्मने युधिष्ठिरको प्रदान किया था —

अस्ति मे भगवन् कश्चिन्तीर्थेभ्यो धर्मसंशयः ।
तत् सर्वं श्रोतुमिच्छामि तन्मे शंस महाभुने ॥

(अनुशासनपर्व २५.५)

दत्तवान् गौतमस्यैतदंगिरा वै महातपाः ।
अंगिराः समनुज्ञातः काश्यपेन च धीमता ॥

(अनुशासनपर्व २५.६९)

महर्षि अंगिरा, महर्षि कश्यप अत्यन्त प्राचीनकाल के हैं, उनके साथ श्री गौतमका उल्लेख उनकी प्राचीनताको और अधिक स्पष्ट करता है ।

ब्रह्मपुराणके अनुसार भगवान् शिवकी जटाके साथ गौतमी गंगाको ब्रह्मगिरिसे प्रवाहित करनेका श्रेय महर्षि गौतमको ही प्राप्त होता है ।

भगवान् शंकरकी जटामें स्थित दिव्य गंगाको इस पृथ्वी पर प्रवाहित करनेवाले एक तो राजा भगीरथ हैं और दूसरे ये ऋषि गौतम हैं, इसीलिए गंगाके दो भेद माने गए हैं—

“ महेद्वरजटास्था या आपो देव्यो महामते ।
तासां च द्विविधो भेद आहर्तुद्व्यकारणात् ॥ ”

(ब्रह्म पु. ७४.२)

ब्रह्मगिरिसे जिस गौतमी गंगाका प्रादुर्भाव हुआ, उसका विलक्षण प्रभाव कहा गया है । चतुरशिरोमणि गौतमने शिवसे यह भी वरदान माँग लिया कि इनके तटसे दस योजनकी दूरी के भीतर आए हुए महापातकी मनुष्य भी, यदि स्नान किए बिना ही मर जाएँ तो भी वे अपने पितरोंके साथ मुक्ति प्राप्त करें—

योजनानां तूपरि तु दश यावच्च संख्यया ।
तदन्तरप्रविष्टानां महापातकिनामपि ॥
तत्पितृणां च तेषां च स्नानायाऽऽगच्छतां शिव ॥
स्नाने चाप्यन्तरे मृत्योर्मुक्तिभाजो भवन्तु वै ॥

(ब्रह्म पु. ७५.४३-४५)

बादमें जब महर्षि गौतमने गंगाको छोड़ा तो वे तो पूर्व समुद्रकी ओर चली गई और मुनिश्रेष्ठने भगवान् शिवका पूजन प्रारंभ कर दिया । बस उनके स्मरण करते ही शिव तत्काल प्रकट हो गए, उस समय महर्षि गौतमने उनका पूजन करके इस तीर्थ में स्नान करने की विधि पूछी—

त्रिलोचनं सुरेशानं प्रथमं पूज्य गौतमः ।
उभयोस्तीरयोः स्नानं करोमीति दधे मतिम् ॥
स्मृतमात्रस्तदा तत्राऽऽविरासीत्करुणार्णवः ।
तत्र स्नानं कथं सिध्येदित्येवं शर्वमब्रवीत् ॥

(ब्रह्म पु. ७६.१४-१५)

भगवान् शिवको यह गोदावरी अत्यन्त प्रिय है, इसके दस नामों का स्मरण करने मात्रसे पापराशिका नाश हो जाता है । भागीरथी गंगासे भी श्रेष्ठ गौतमी गंगा कही गयी है क्योंकि ये भगवान् शंकरकी जटाके साथ लाई गई थीं । दो सौ योजनके भीतर साढ़े तीन करोड़ तीर्थ होनेसे यह गोदावरी गंगा सदा सर्वदा तथा सबके लिए दिव्य तीर्थ है —

सर्वेषां सर्वदा तीर्थं गौतमी नात्र संशयः ।
 तिस्रः कोट्योऽर्धं कोटी च योजनानां शतद्वये ॥
 तीर्थानि मुनिशार्दूल संभविष्यन्ति गौतम ।
 इयं माहेश्वरी गंगा गौतमी वैष्णवीति च ॥
 ब्राह्मी गोदावरी नन्दा सुनन्दा कामदायिनी ।
 ब्रह्मतेजः समानीता सर्वपापप्रणाशिनी ॥
 स्मरणादेव पापौघहन्त्री मम सदा प्रिया ।

(ब्रह्म पु. ७७.८-११)

इसी गौतमी गंगाके तटपर मृत यमराजको शिवके प्रियगण नंदीने गोदावरीका जल छिड़ककर जीवित कर दिया था । उस समय गौतमी गंगाके उत्तर तटपर विष्णु आदि देवता ठहर गए थे तथा महेश्वर की पूजा करने लगे थे । एक लाख बारह हजार तीर्थ भी वहाँ एकत्र हो गए थे—

ततो यमादयः सर्वे अभिषिक्तास्तु नन्दिना ।
 उत्थिताश्च सजीवास्ते दक्षिणाशां ततो गताः ॥
 उत्तमे गौतमीतीरे विष्णवाद्याः सर्वदेवताः ।
 स्थिता आसन्पूजयन्तो देवदेवं महेश्वरम् ॥
 तत्राऽऽसन्नयुतान्यष्ट सहस्राणि चतुर्दश ।
 तथा षट् च सहस्राणि पुनः षट् च तथैव च ॥

(ब्रह्म पु. ९४.४५-४७)

मुनिश्रेष्ठ गौतमकी आज्ञासे शुक्रने गोदावरीके तटपर ही शिवकी आराधना करके मृतसंजीविनी विद्या प्राप्त की थी—

मृतसंजीविनी विद्यामज्ञातां त्रिदशैरपि ।
 तां दत्तवान्मुश्नश्चेष्टस्तस्मै शुक्राय याचसे ॥

(ब्रह्म पु. ९५.२६)

नारद पुराणके अनुसार महायोगी गौतमकी तपस्यासे प्रसन्न होकर त्र्यम्बकेश्वरके रूपमें भगवान् त्र्यम्बकपर्वतपर विराजमान हुए (नारद पुराणांक, पृष्ठ ५९५)

इन्हीं गौतमने अपने तपोबलसे गंगाको अपने आश्रममें प्रकट करके उन ब्राह्मणोंकी १२ वर्षों तक सेवा की, जो अकालके समय ऋषि गौतमकी शरणमें पधारे थे (नारद पुराणांक, पृष्ठ ५९५) ।

देवीभागवत में यह कथा विस्तारपूर्वक आयी है, जहाँ कृतघ्नतापूर्वक आचरण करनेके फलस्वरूप ब्राह्मणोंको महर्षि गौतमने घोर शाप देते हुए कहा था — हे अधम ब्राह्मणों ! आजसे वेदमाता गायत्रीके ध्यान और गायत्रीमंत्र जपके सर्वथा अनधिकारी हो जाओ। वेदोक्त यज्ञ में, शिवकी उपासनामें, श्रीभगवती देवीकी अर्चनामें, देवी-महोत्सव देखनेमें अनधिकारी रहो। रुद्राक्ष, बिल्वपत्र एवं भस्म धारण करने से वंचित रहो, तुम अधम होकर नीच जीवन बिताओ, तुम्हें माता-पिता, भाई-बहन और पत्नी बेचने वालोंके समान अधम गति प्राप्त हो, जो भी तुम्हारे वंश में उत्पन्न होंगे उन्हें भी अधम गति प्राप्त होगी। तुम पर भगवती जगदम्बा का अवश्य ही कोप है, अतः तुम्हें अंधकूप और नरक कुण्डमें अवश्यही रहना पड़ेगा (देवीभागवतांक पृष्ठ ६६१) ।

महर्षि गौतमने गौतमी गंगाको तो प्रवाहित ही किया है, और भी अनेक तीर्थोंके साथ गौतम मुनिका अत्यंत घनिष्ठ संबंध है। स्कन्द पुराणके अनुसार नर्मदाके उत्तर तटपर गौतमेश्वर नामक उत्तम तीर्थ की स्थापना गौतम ऋषि ने ही की है। इस तीर्थ की महत्ताका प्रतिपादन स्वर्ग की सीढ़ीके रूपमें किया गया है। सभी पातकोंका नाश करनेके लिए तथा स्वर्गलोककी प्राप्ति करानेके लिए भगवान् शिव वहाँ सदा निवास करते हैं (स्कन्दपुराणांक पृष्ठ ८११) ।

गुप्त क्षेत्रमें गौतमेश्वर नामक शिवलिंग की स्थापना गौतममुनिने ही की है। वहाँ पर उन्होंने योग साधनाके द्वारा योगसिद्धिको प्राप्त किया (स्कन्दपुराणांक, पृष्ठ १७०)। इस स्थानपर आज भी गौतममुनि विद्यमान हैं— ऐसा नारदमुनिने अर्जुनसे कहा था (स्कन्द पुराणांक, पृष्ठ १७५) । महीसागरसंगम ही गुप्त क्षेत्र कहलाता है, जहाँ शनिवारकी अमावास्याके दिन स्नान करनेका बही फल मिलता है, जो प्रभासक्षेत्रकी दस, पुष्करतीर्थकी सात तथा प्रयागकी आठ यात्रा करनेसे प्राप्त होता है (स्कन्द-पुराणांक, पृष्ठ १७७) ।

ऋषिप्रवर गौतम गोकर्णके शिवमहोत्सवको देखकर जिस समय मिथिला नगरमें पधारे, उस समय इक्ष्वाकुवंशीय कल्माषपाद राजा को शिवकी उपासना करनेके लिए गोकर्ण ही जाने की सम्मति दी थी, जिससे वह ब्रह्महत्याके पापसे बच गया था (स्कन्द पुराणांक, पृष्ठ ५०८) । इसी प्रसंगमें कहा गया है कि रवि, सोम और बुधकी अमावास्यामें किया गया शिवपूजनका फल अनन्तगुना हो जाता है ।

मुनिश्रेष्ठ गौतम तपःसिद्ध महापुरुष हैं—पारियात्र पर्वतपर ६० हजार वर्ष तक तपस्या करनेका उल्लेख महाभारतमें इस प्रकार किया गया है—

पारियात्रं गिरिं प्राप्य गौतमस्याश्रमो महान् ।

उवास गौतमो यं च कालं तमपि मे शृणु ॥

षष्टि वर्ष सहस्राणि सोऽतप्यद् गौतमस्तपः । (शान्तिपर्व ४.५)

इन्हीं गौतमके द्वारा पाले गए एक ऐसे हाथी का उल्लेख भगवान् व्यासने अपने महाभारतमें किया है, जो पुत्रके समान अत्यन्त प्रिय था, समिधा व जल लाकर दिया करता था, आश्रम की रखवाली करता था, बड़ा विनम्र था, गुरुसेवामें तल्लीन रहता था, समझदार था, कृतज्ञ था और जितेन्द्रिय था—

इष्टमोदकप्रदातारं शून्यपालं ममाश्रमे ।

विनीतमाचार्यकुले सुयुक्तं गुरुकर्मणि ॥

शिष्टं दान्तं कृतज्ञं च प्रियं च सततं मम ।

(अनुशासनपर्व १०२.९-१०)

इस अवसर पर यह भी कथा आती है कि इन्द्रने पहले तो धृतराष्ट्र राजाका रूप धारण करके इस हाथीको चुरा लिया, लेकिन बादमें गौतम मुनिको वेदज्ञ ब्राह्मण जानकर तत्काल उसे लौटा दिया ।

वेदवित्, तपःसिद्ध तथा महायोगी होनेके अतिरिक्त ये मधुविद्याके भी ज्ञाता थे । स्वयम्भू ब्रह्मासे लेकर पौतिमाष्य तक जिन-जिन ऋषियोंका नाम मधुविद्याकी परम्परामें लिया गया है, उनमें गौतममुनि भी सम्मिलित हैं—

“शाण्डिल्यः कौशिकाच्च गौतमाच्च ।

गौतमः आग्निवेश्यात्”

(बृहदा. उप. २.६.१-२)

इनके अनेक प्रिय शिष्योंमें उत्तंक नामके एक शिष्यकी कथाका चित्रण भी व्यासने एक स्थान पर किया है । इन उत्तंक मुनिने अपनी गुरुमाता अहल्याके

कहने पर राजा सौदासकी पत्नी मदयन्तीके पास जाकर उसके उससे दोनों दिव्य मणिमय कुण्डल प्राप्त करनेमें सफलता प्राप्त कर ली थी (आश्व-मेधिकपर्व, ५७ अध्याय) ।

जिन गौतममुनिके अलौकिक कृत्योंका अब तक उल्लेख किया गया है, ये ही भारतीय परम्पराके अनुसार न्यायशास्त्रके भी प्रणेता माने गए हैं । लोकोक्तिके रूपमें यह कारिका विद्वान् लोग प्रायः उद्धृत किया करते हैं—

गौतमस्य कणादस्य कपिलस्य पतंजलेः ।

व्यासस्य जैमिनेश्चापि दर्शनानि षडेव हि ॥

पद्मपुराणमें न्यायदर्शनके रचयिता गौतम ही कहे गए हैं—

कणादेन तु संप्रोक्तं शास्त्रं वैशेषिकं महत् ।

गौतमेन तथा न्यायं सांख्यं तु कपिलेन वै ।

(उत्तरखण्ड, २६३ अध्याय)

देवीभागवतमें सरस्वतीकवच धारण करके विशिष्ट ग्रन्थ रचना करनेवाले अनेक ऋषियोंके साथ महर्षि गौतमका भी नाम लिया गया है—

कणादो गौतमः कण्वः पाणिनिः शाकटायनः ।

ग्रन्थं चकार यद् धृत्वा दक्षः कात्यायनः स्वयम् ॥

(देवीभागवत पुराणांक ९.४)

संभव है, सरस्वतीकवचकी शक्तिसे गौतममुनिने इसी न्यायशास्त्रकी रचना की हो ।

गौतम मुनि ही मेधातिथिके नामसे महाभारतमें स्मरण किए गए हैं—

मेधातिथिर्महाप्राज्ञो गौतमस्तपसि स्थितः ।

विमृश्य तेन कालेन पत्न्याः संस्थाव्यतिक्रमम् ॥

(शान्तिपर्व, २६५ अध्याय)

प्रसिद्ध संस्कृत नाटककार भासको भी यह पता था कि गौतम मुनिका ही नाम मेधातिथि है—

“ भोः ! काश्यपगोत्रोऽस्मि साङ्गोपाङ्गं वेदमधीय

मानवीयं धर्मशास्त्रं, माहेश्वरं योगशास्त्रं,

मेधातिथेर्न्यायशास्त्रं, प्राचेतसं श्राद्धकल्पं च ”

(प्रतिमानाटक, पंचमोऽंकः)

इन्हींका दूसरा नाम अक्षपाद था, जिसका उल्लेख भाष्यकार वात्स्यायन तथा वार्तिककार दोनों ही करते हैं—

योऽक्षपादमूर्षि न्यायः प्रत्यभाद् वदतां वरम् ।

तस्य वात्स्यायन इदं भाष्यजातमवर्तयत् ॥ (वात्स्यायन)

यदक्षपादः प्रवरो मुनीनां शमाय शास्त्रं जगतो जगाद ।

कुताकिकाज्ञाननिवृत्तिहेतोः करिष्यते तस्य मया निबन्धः ॥

(वार्तिककार)

अन्तमें भी वार्तिककार उद्योतकराचार्य लिखते हैं —

यदक्षपादप्रतिमो भाष्यं वात्स्यायनो जगौ ।

अकारि महत्तस्य भारद्वाजेन वार्तिकम् ॥

इन्हीं अक्षपादको कहीं कहीं अक्षचरण भी कहा गया है —

“ अक्षचरणः गौतमऋषिर्न्यायशास्त्रसूत्रकारः ”

(सर्वदर्शनसंग्रहपर दर्शनांकुर व्याख्या, पृष्ठ २७, द्रष्टव्य पृष्ठ २३४)

स्कन्दपुराणके माहेश्वर खण्डमें भक्तप्रवर नारदका यह वक्तव्य तो विशेष द्रष्टव्य ही है कि महायोगी गौतम मुनि ही अक्षपाद हैं, जो परम साध्वी पतिव्रता-शिरोमणि अहल्याके पति हैं तथा जो गोदावरी गंगाको इस पृथ्वीपर लाए हैं । (स्कन्द पुराणांक, पृष्ठ १७०)

विदेशी विद्वान् चाहे स्वीकार न करें. तथापि भारतीय परम्परा तथा मनीषी विद्वानोंकी मान्यता इन कतिपय उपर्युक्त अन्तः साक्ष्योंके आधार पर मेधातिथि और अक्षपाद नामसे प्रसिद्ध महर्षि गौतमको ही न्यायसूत्रके प्रवर्तक के रूपमें पुष्ट करती चली आ रही है ।

इन्हीं गौतम मुनिका प्रिय पुत्र चिरकारी था, जिसके साथ ही उन्होंने अपना पांचभौतिक शरीर छोड़ा—

उपास्य बहुलास्तस्मिन्नाश्रमे सुमहातपाः ।

समाः स्वर्गं गतो विप्रः पुत्रेण सहितस्तदा ॥

(शान्तिपर्व २६६.७८)

समस्त प्राणियोंका कल्याण करनेकी इच्छासे अनेक प्रकारके दुःसाध्य कार्य करके पवित्र अन्तःकरणवाले महर्षि गौतमने प्रलयाबाधित शाश्वत ब्रह्मलोकको प्राप्त किया—

इदं यः शृणुयान्नित्यं यः पठेद् वा जितेन्द्रियः ।

स याति ब्रह्मणो लोकं ब्राह्मणो गौतमो यथा ॥

(अनुशासनपर्व १०२.६३)

पापोंकी निवृत्तिके लिए, अन्तःकरणकी शुद्धिके लिए तथा समयका सदुपयोग करनेके लिए गौतम जैसे महान ऋषियोंका दिव्य चरित्र अवश्यही हम सभीको पढ़ना—मुनना चाहिए ।

पवित्र सेवामें



स्व. सौ. कुसुमदेवी चंपालालजी चास्टवे
पूता (महाराष्ट्र)

जन्म : दि. २९-५-१९३० ✱ स्मृतिदिन : दि. २६-२-१९८४

अ. भा. गुर्जर गौड ब्राह्मण समाज एज्यूकेशनल चें. ट्रस्ट

“ हमारे समाजका कल्पतरु ”

शिक्षणन्यासके निमित्त ५ लाख रुपए एकत्र करनेका लक्ष्य निर्धारित किया गया है। आपसे प्रार्थना है कि अत्यन्त उदार हृदयसे अधिकाधिक सहयोग प्रदान करें, जिससे लक्ष्य पूर्ति हो सके।

इससे जो धनराशि व्याजके रूपमें प्राप्त होगी, उस समस्त राशिका छात्रवृत्तिके रूपमें उन विद्यार्थियोंको वितरण किया जायेगा, जो मेधावी हैं और आगे पढनेके लिए जिनके हृदमें ललक है। इसके अतिरिक्त असहाय और निर्धन विधवा बहिनोंकी सहायताके लिए भी इस राशिका उपयोग किया जायेगा।

पता -

अ. भा. गु. गौ. ब्रा. समाज ए. चें. ट्रस्ट
६३५/५१ 'आशायोग', विजयनगर कॉलनी,
पूना-४११ ०३०. (महाराष्ट्र)

आपका सहयोगाकांक्षी;
रामनाथ चु. उपाध्ये, पूना
मंत्री

—: पुस्तिका वितरण समिती :-

सर्वश्री कन्हैयालाल रा. शर्मा, पूना
चतुर्भुज (शाम) चांदमल चौबे पिंपरी पूना

विजयकुमार शं. नाबरिया, पूना
ओमप्रकाश गु. उपाध्ये, पूना

विशेष सूचना: इस पुस्तिका की बिक्री के द्वारा जो रकम प्राप्त होगी वह अ. भा. गु. गौ. ब्रा. महासभा (रजि.) के स्थाई कोषमें जमा की जायेगी।

(सहकार मुद्रणालय, पुणे २.)